6 सेमेस्टर (सम्मान)

पाठ–सभ्यता का संकट

लघु प्रश्न

1. 'सभ्यता का संकट' नामक संदेश कब और कहाँ पढ़ा गया था?

2. 'सभ्यता का संकट' निबंध किस शीर्षक से अंग्रेजी में प्रकाशित हुआ?

3 'जय–जय–जय रे मानव अभ्युदय'–यह पंक्ति किस पाठ से ली गई है? पंक्ति का वक्ता कौन है?

4. 'सभ्यता का संकट' निबंध लिखते समय लेखक की उम्र कितनी थी?

5. रवीन्द्रनाथ को मानवीय मैत्री का शुद्ध रूप किनमें दिखाई देता है?

6. इंग्लैण्ड में रवीन्द्रनाथ किनके भाषण से प्रभावित हुए?

7. 'सरस्वती' और 'दृशद्वती' नदियों के बीच का प्रदेश किस नाम से प्रसिद्ध था?

8. 'बाह्य आचार' के विरोध का कारण क्या था?

9. 'सदाचार' किसे कहा गया?

10. भारतीयों ने अंग्रेजों को अपने हृदय में उँचा स्थान क्यों दिया?

11. आधुनिक शासन व्यवस्था होते हुए भी भारत में क्या कमी थी?

12. रवीन्द्रनाथ ने 'दरबानी' किसे कहा है?

13. जापान के विकास में किसकी महत्त्वपूर्ण भूमिका रही?

14. रवीन्द्रनाथ किसके ऋणी हैं और क्यों

15. रवीन्द्रनाथ के अनुसार 'परित्राता' किस देश से आयेगा? वह मनुष्य को क्या देगा?

16. 'विजेताओं के सौजन्य से ही विजित देश का स्वातंत्र्य–पथ प्रशस्त हुआ' लेखक की इस भावना का कारण क्या था?

17. 'भारत का उन्नति–पथ 'में बाधा क्या है?

18. इंग्लैण्ड के राजनीतिज्ञों ने जापान की किस नीति को 'दस्यु वृत्ति' कहा?

19. रवीन्द्रनाथ ठाकुर का जन्म और प्रयाण वर्ष लिखें।

20. रवीन्द्रनाथ ठाकुर के पिता का नाम लिखें।

21. रवीन्द्रनाथ ठाकुर के एक निबंध–संकलन का नाम लिखें।

22. रवीन्द्रनाथ ठाकुर को नोबेल पुरस्कार किस रचना के लिए मिला?

23. रवीन्द्रनाथ ठाकुर को नोबेल पुरस्कार किस वर्ष मिला?

24. विश्व भारती की स्थापना किस वर्ष और किसके द्वारा की गई?

25. विश्वभारती की स्थापना कहाँ की गई?

ससंदर्भ व्याख्या करें–

1. ''मानव में जो कुछ भी श्रेष्ठ है वह किसी देश के संकीर्ण दायरे में आबद्ध नहीं होता । वह ऐसी संपत्ति नहीं होती जो कृपण के भंडार में बंद पड़ी हो।''
2. ''न्याय–बुद्धि के अनुशासन से प्रेरित होकर हमारे परिवार ने धर्म–मत और लोक–व्यवहार दोनों ही क्षेत्रों में यह परिवर्तन स्वीकार किया था।''

3. ''मानव–जाति को पीड़ित करने वाली इस महामारी का पाश्चात्य सभ्यता की मज्जा में जन्म हुआ।''
4. जब मैं सभ्य जगत् की महिमा का एकान्त–चित्त से ध्यान करता था उस दिन कभी कल्पना भी नहीं कर सकता था कि सभ्य कहलाने वाले मानव–आदर्श का ऐसा निष्ठुर और विकृत रूप भी संभव है।''
5. शासन–तंत्र के उपरी भाग में यदि इस आत्मविच्छेद को गुप्त रूप से प्रश्रय न मिलता तो भारतीय इतिहास में जो इतनी बड़ी अपमानजनक और असभ्य बातें हुई, वह न होतीं।''